श्री राम मंदिर अयोध्या - एक संक्षिप्त इतिहास
(पौराणिक कथाओं एवं वर्तमान तथ्यों पर आधारित)

हिन्दू कॉउन्सिल ऑफ़ ऑस्ट्रेलिया पर्थ शाखा के लिए संकलित

प्राचीन श्री राम मंदिर अयोध्या

संकलनकर्ता
श्री राम कथा संस्थान पर्थ,
ऑस्ट्रेलिआ – ६०२५

क्रमावली

दो शब्द 3
प्राक्कथन 5
अयोध्या - श्री राम मंदिर की प्रथम स्थापना 9
मंदिर-मस्जिद विवाद 14
बाबरी मस्जिद विध्वंस 18
श्री राम मंदिर अयोध्या प्रस्तावित मॉडल 21
श्री राम आरती 22

दो शब्द

(श्री दाम जी भाई कोरिया, अध्यक्ष, हिन्दू कॉउन्सिल ऑफ़ ऑस्ट्रेलिया पर्थ शाखा, द्वारा)

श्री राम मंदिर अयोध्या का इतिहास बड़ा ही रोचक रहा है। सनातन धर्म के इष्ट भगवान् श्री राम की जन्मभूमि अयोध्या कल्पों से अति पावन, हृदय को शांति देनी वाली तथा मोक्ष दायिनी रही है। अभाग्य से पिछले कुछ ५०० वर्षों से इस पावन भूमि का अतिक्रमण कर उसे सनातन धर्म के अनुयायीओं से छीन लिया गया था। पिछले ५०० वर्षों में इसे वापस लेने का सनातन धर्म के संतों एवं अनुयायीओं का एक संघर्षपूर्ण इतिहास रहा है, जहाँ अनगिनत बलिदान दिए गए हैं। आज हम गर्व के साथ अपने इष्ट भगवान् श्री राम की जन्मभूमि में उनका भव्य मंदिर बनाने की ओर बढ़ रहे हैं। मैं यह याद दिलाना चाहता हूँ कि हमें उन सभी वीर सनातनीओँ के उपकारों को स्मरण रखते हुए उनके बलिदानों को कभी नहीं भूलना चाहिए। मुझे अपने पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के हिन्दू स्वयं सेवक संघ की पर्थ शाखा के कार-सेवकों पर अति गर्व है जिनका मैंने १९९० में विश्व हिन्दू परिषद् के आवाहन पर नेतृत्व किया था। बड़ा ही कठिन समय था। श्री मुलायम सिंह यादव उत्तर प्रदेश के तब मुख्य मंत्री थे और वह हर हाल में बाबरी मस्जिद और मुसलमानों के साथ खड़े थे। उन्होंने धारा १४४ लगा कर कार-सेवकों का अयोध्या में प्रवेश वर्जित कर दिया था। मैं अपने कार-सेवकों की टुकड़ी के साथ मध्य प्रदेश से पहले प्रयागराज पहुंचा और तब वहां से पैदल ही हम सब अयोध्या के लिए निकल पड़े। २०० किलोमीटर की पैदल यात्रा कर अत्यंत कठिनाई से हम किसी प्रकार अयोध्या पहुंचे। सभी एकत्रित कार-सेवकों के साथ हम मंदिर के परिसर पर पहुंचे ही थे की पुलिस ने मुख्य मंत्री श्री मुलायम सिंह के आदेश पर गोलियां चलानी प्रारम्भ कर दीं। एक गोली मेरा सीना भेदना ही चाहती थी कि पास में खड़े एक साधु महाराज ने बड़ी शीघ्रता से मुझे एक ओर धकेल दिया। गोली मेरी कनपटी के पास से निकल गई। मेरा जीवन तो प्रभु की कृपा से अवश्य बच गया, लेकिन मैंने स्वयं अपने नेत्रों से अनगिनत संख्या में कार-सेवकों को पुलिस की गोलियों से मरते देखा । मैंने यह भी देखा कि किस प्रकार पुलिस

मृतक कार-सेवकों के शवों को बोरीओं में भरकर पत्थरों के साथ सरयू नदी में बहा रही थी। बड़ा ही वीभत्स दृश्य था। उसके बाद हम एक आश्रम में आ गए जहाँ हम कुछ दिनों रुके। फिर वातावरण शांत होने पर वापस आए। इसी प्रकार १९९२ में भी जब मस्जिद का विध्वंस हुआ, मैं तभी भी अपनी टोली के साथ अयोध्या में उपस्थित था। मेरा संकल्प था कि प्रभु के कार्य के लिए मेरा जीवन भी चला जाय, तो मैं धन्य हो जाऊँगा।

आज हम दीपावली पर्व मनाने जा रहे हैं। यह हमारे इष्ट द्वारा दिए हुए मार्ग '**असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय । मृत्योर्मामृतं गमय ॥**' को दर्शाता है। इसी दिन राम राज्य की स्थापना हुए थी और यही हमारा सपना है। भारत में ही नहीं विश्व में राम राज्य की स्थापना हो। इसी आशय के साथ मैं इस पर्व पर आप सभी को शुभ कामनाएं देता हूँ।

श्री राम कथा संस्थान पर्थ ने इस पुस्तिका का संकलन किया। उसके अध्यक्ष डॉ यतेंद्र शर्मा को मेरा धन्यवाद।

एक बार फिर पर्व की शुभ कामनाओं के साथ, आपका अपना,

दाम जी भाई कोरिया
अध्यक्ष, हिन्दू कॉउन्सिल ऑफ़ ऑस्ट्रेलिया पर्थ शाखा

१ नवंबर २०२०

प्राक्कथन

ॐ, गुरुर्ब्रह्मा ग्रुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

मुझसे अक्सर लोग प्रश्न पूछते हैं,' भगवान् के इस धरा पर अनगिनत अवतार हुए हैं। हर अवतार की कोई न कोई जन्मभूमि भी है। किसी भी जन्मभूमि को लेकर इतने बलिदान और योगदान नहीं रहे जितने श्री राम की जन्मभूमि अयोध्या को लेकर रहे हैं। ऐसा क्यों?' संक्षेप में मैं संभवतः इसका कारण इस प्रकार सम्बोधित कर सकता हूँ ।

मैं आपको त्रेता युग में ले चलता हूँ। प्रभु जिस कार्य के लिए अवतरित हुए थे, वह सब पूर्ण हो गए हैं। प्रभु के अवतार का कारण:

जब जब होई धरम की हानि । बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी ।।
तब तब प्रभु धरि विविध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ।।

असुरों को मोक्ष दे प्रभु ने पृथ्वी पर शांति स्थापना कर दी है। श्री राम ने राम-राज्य की स्थापना कर दी है। उनके दोनों होनहार पुत्र - लव और कुश युवावस्था को प्राप्त हो चुके हैं। समय आ गया है कि भगवान् श्री राम अपने धाम 'विष्णु लोक' को वापस लौट जाएं, और ऐसा ही वह निश्चय भी कर लेते हैं; अपने शरीर को सरयू नदी में जल समाधि लेकर। अपने राज्य को दो भागों में विभक्त करते हैं, और क्रमशः पुत्र लव को पश्चिमी और पुत्र कुश को पूर्वी राज्य का साम्राज्य देते हैं।

श्री राम अपने पुत्रों को आदेश देते हैं कि अयोध्या सूर्यवंश साम्राज्य की अंतिम राजधानी होगी, अतः वह अपने अपने साम्राज्यों की अलग अलग राजधानी बनाएं। प्रभु का आदेश होता है कि अयोध्या के उनके महल को मंदिर में

परिवर्तित कर अयोध्या को तीर्थ क्षेत्र घोषित कर दिया जाए और श्री हनुमान जी को वहां का राजा बना दिया जाए। इस आज्ञा का पालन होता है। सम्राट लव अपनी राजधानी लवनगर बनाते हैं जो आधुनिक लाहौर के नाम से जाना जाता है। सम्राट कुश अपनी राजधानी कुशीनगर बनाते हैं जो गोरखपुर के समीप है। भगवान् श्री राम के आदेशानुसार सम्राट कुश अयोध्या के भगवान् श्री राम के निवास को मंदिर में परिवर्तित कर देते हैं, और श्री हनुमान जी को वहां का राजा बना उन्हें अयोध्या के सिंहासन पर आसीन कर देते हैं। श्री हनुमान जी अपना निवास हनुमानगढ़ी में बनाते हैं और मंदिर के कार्य कलापों का संचालन करते हैं। यही कारण है कि श्री राम लला के दर्शन से पहले वहां के राजा श्री हनुमान जी से अनुमति लेना आवश्यक है अन्यथा श्री राम लला के दर्शन का फल प्राप्त नहीं होता। आपको स्मरण होगा कि ५ अगस्त २०२० को जब माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र जी भाई मोदी ने श्री राम जन्मभूमि के मंदिर निर्माण हेतु भूमि पूजन किया था तो सर्व प्रथम वह भूमि पूजन करने की आज्ञा लेने वहां के राजा श्री हनुमान जी के पास हनुमानगढ़ी गए थे।

अब आप स्वयं विचार कीजिए। जिन प्रभु के भृकुटी संकेत मात्र से इस संसार का संचालन होता हो, उनकी आज्ञा, मैं यहां आज्ञा शब्द पर आपका विशेष ध्यान चाहूंगा, का पालन करना हर उनके अनुयायी के लिए कर्तव्य है चाहे उसमें प्राणों की आहुति ही न देनी पड़ी। और हुआ भी यही ।

इस प्रकार का आदेश भगवान् के किसी अन्य अवतार ने कभी नहीं दिया। अतः यह विशेष स्थली हमें अत्यंत प्रिय है।

अभाग्य से लगभग ५०० वर्ष पूर्व हमारी इस पवित्र स्थली को हम से छीन लिया गया। तभी से इसे वापस लेने का संघर्ष प्रारम्भ हुआ। अनगिनत भक्तों ने तब से आज तक अपने प्राणों की आहुति दी। भाग्य से दिसंबर २०१९ में सुप्रीम कोर्ट के एक निर्णय ने हमें हमारी पावन भूमि वापस की और जैसा आप सब जानते हैं, शीघ्र ही वहां एक भव्य मंदिर का निर्माण होगा।

मुझे गर्व है कि इस संघर्ष में पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के कार सेवकों का माननीय श्री दाम जी भाई के नेतृत्व में अतुलनीय योगदान रहा। १९९० की कार सेवा में श्री दाम जी भाई अपने प्राणों की आहुति देने के निकट पहुँच गए थे जब अयोध्या में कार सेवकों पर पुलिस ने गोली चला दी थी। एक साधू महाराज के धक्का देने पर गोली जो उनके सीने पर प्रहार करने वाली थी वह उनकी कनपटी से होकर निकल गई। भाई श्री दाम जी की प्रभु ने प्राण रक्षा तो अवश्य की लेकिन अनगिनत कार सेवकों के प्राणों की आहुति इस कार सेवा में हुई। हमें उनके बलिदानों को अवश्य याद रखना चाहिए।

हमारी संस्था, 'श्री राम कथा संस्थान पर्थ' उनके एवं संत कार सेवकों के योगदान को प्रणाम करती है तथा उनके बलिदान के स्मरण में, उनके अभिनन्दन में, एक छोटी सी कविता की प्रस्तुति करती है ।

आज करें अभिनन्दन हम, पूज्य संत कार सेवकों का ।
पावन मास मूल कार्तिक, मत्स्य रूप हरि विष्णु का ।।
आज करें अभिनन्दन हम, पूज्य संत कार सेवकों का ।

अनुकरणीय समाजसेवी, स्वयं सेवक संघी संतों का ।
जीवन समर्पित कार्य प्रभु, लक्ष्य मंदिर श्री राम का ।।
आज करें अभिनन्दन हम, पूज्य संत कार सेवकों का ।

लें शपथ न भूलें कभी, बलिदान संत कार सेवकों का ।
अब मार्ग प्रशस्त भव्य निर्माण, राम मंदिर अयोध्या का ।।
आज करें अभिनन्दन हम, पूज्य संत कार सेवकों का ।

श्री राम प्रसन्न हे श्रेष्ठ जन, दें आशीष आत्मिका का ।
प्रमुदित जीवन हिय शांत, हर कार सेवक श्रद्धालू का ।।
आज करें अभिनन्दन हम, पूज्य संत कार सेवकों का ।

श्री राम मंदिर अयोध्या - एक संक्षिप्त इतिहास

दो आशीष हे प्रभु राम, हो कल्याण सब शरणागत का ।
हों कष्ट दूर रहें माया रहित, सुखी हो जीवन सब का ।।
आज करें अभिनन्दन हम, पूज्य संत कार सेवकों का ।

हिन्दू कॉउन्सिल ऑफ़ ऑस्ट्रेलिया के पर्थ शाखा के अध्यक्ष माननीय श्री दाम जी भाई कोरिया के अनुरोध पर मैं ने श्री राम मंदिर अयोध्या के संक्षिप्त इतिहास लिखने का एक प्रयास किया जिसको मैं एक पुस्तिका के रूप में प्रस्तुत करता हूँ। मुझे आशा है कि मेरा यह प्रयास आपको अवश्य ही रुचिकर लगेगा। असंख्य बलिदानों का लेखन करना अवश्य ही मेरे जैसे सामान्य पुरुष के लिए असंभव है। अतः इस अल्प ज्ञान से प्रेरित मेरी इस पुस्तिका की त्रुटिओं को आप क्षमा करें।

आपका अपना, प्रभु की सेवा में रत,

डॉ यतेंद्र शर्मा
श्री राम कथा संस्थान पर्थ
पर्थ, ऑस्ट्रेलिया - ६०२५

१ नवंबर २०२०

अयोध्या - श्री राम मंदिर की प्रथम स्थापना

जब त्रेता युग में जय विजय के दूसरे अवतार रावण और कुम्भकरण को मोक्ष देने के लिए अपने वचनानुसार भगवान् विष्णु ने रघुकुल सूर्यवंश में पृथ्वी पर अवतार लेने का निश्चय किया, तब उन्होंने विश्वकर्मा को महर्षि वशिष्ठ के पास उपयुक्त स्थान चुनने के लिए भेजा। उस समय सूर्यवंश के प्रतापी चक्रवर्ती सम्राट इक्ष्वाकु का आर्यावर्त में शासन था। महर्षि वशिष्ठ ने तब सरयू नदी के तट पर इस लीलाभूमि का चयन किया। वहां तब विश्वकर्मा ने नगर का निर्माण किया। आर्यवंश के कुलगुरु एवं सूर्यवंश के मार्ग निर्देशक महर्षि वशिष्ठ ने चक्रवर्ती सम्राट इक्ष्वाकु को इस नगरी को अपनी राजधानी बनाने का आदेश दिया। महर्षि वशिष्ठ ने इस नगरी का नामकरण किया, अयोध्या - अर्थात किसी भी योद्धा से अविजित नगर।

चक्रवर्ती सम्राट इक्ष्वाकु की तेतीसवीं पीढ़ी में चक्रवर्ती सम्राट दशरथ हुए, जिनके पुत्र बनकर भगवान् विष्णु श्री राम स्वरूप में इस पृथ्वी पर अवतरित हुए।

चक्रवर्ती सम्राट ध्रुव के पितामह स्वायम्भुव मनु ने अपने पुत्र चक्रवर्ती सम्राट उत्तानपाद को राज्य सौंपने के पश्चात अपनी पत्नी शतरूपा के साथ संन्यास ले लिया। अपने संन्यास वास में वह भ्रमण करते करते गोमती नदी के किनारे पहुँच गए। वहां के वातावरण से अति प्रसन्न हो उन्होंने अपना निवास वहीं बना लिया। दोनों पति-पत्नी ब्रह्ममुहूर्त में प्रतिदिन निर्मल जल में स्नान कर द्वादशाक्षर मन्त्र, '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**', का हृदय से प्रेम सहित जाप करते हुए केवल कंद मूल फल का सेवन कर कई वर्षों तक तप करते रहे। बाद में उन्होंने कंद मूल फल का भी त्याग कर दिया और केवल जल के आधार पर ही तप करने लगे। उनकी बस एक ही इक्षा थी कि निर्गुण, अखंड, अनंत, अनादि प्रभु के स्वयं अपने नेत्रों से दर्शन करें। उनकी तपस्या से प्रसन्न हो प्रभु ने आकाशवाणी के माध्यम से उन्हें वर माँगने को कहा। कानों में अमृत समान लगने वाले आकाशवाणी के वचनों से उनका शरीर पुलकित और प्रफुल्लित हो गया तब सम्राट मनु दंडवत करते हुए प्रेम से प्रभु से बोले, 'हे

प्रभु, आप सेवकों के कल्पवृक्ष और कामधेनु हैं। आपके चरण रज की ब्रह्मा और शिव जी भी वन्दना करते हैं। हे अनाथों का कल्याण करने वाले यदि आप हम पर प्रसन्न हैं तो हमें अपने स्वरूप का दर्शन दीजिए।' तब उनकी विनती से प्रसन्न हो भगवान् विष्णु उनके सामने प्रगट हो गए तथा फिर वर माँगने का आग्रह किया। तब हाथ जोड़कर मनु और उनकी पत्नी शतरूपा जी उनके चरणों में लिपट कर बोले, 'हे प्रभु, हम आपके समान पुत्र चाहते हैं।'

दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहेऊँ सतिभाउ ।
चाहउँ तुमहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ ।।

सम्राट की प्रीति देखकर और उनके विनीत वचन सुन प्रभु बोले, 'हे राजन, मैं अपने समान दूसरा कहाँ खोज कर लाऊँ, मैं स्वयं ही शीघ्र तुम्हारे गृह में पुत्र बनकर जन्म लूंगा। अब मेरी आज्ञा शिरोधार्य कर इंद्र नगर अमरावती में कुछ काल के लिए निवास करो। समय आने पर अयोध्या में सूर्यवंश में तुम जब जन्म लोगे तब मैं तुम्हारे पुत्र के रूप में अवतरित हूँगा।'

भगवान् के वचनानुसार समय आने पर अयोध्या सम्राट अज के गृह में मनु जी ने उनके पुत्र के रूप में दशरथ नाम से जन्म लिया। अब से लगभग १०,००० वर्ष पूर्व भगवान् श्री राम ने चक्रवर्ती सम्राट दशरथ के गृह में उनके पुत्र स्वरूप में जन्म लिया। गोस्वामी तुलसी दास जी लिखते हैं:

नौमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता।।
मध्यदिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक बिश्रामा।।

भगवान् के पृथ्वी पर अवतार का कारण अधर्म को समाप्त कर धर्म की स्थापना करना था।

जब जब होई धरम कै हानि । बाढ़हि असुर अधम अभिमानी ।।
करहि अनीति जाई नहीँ बरनी । सिदही विप्र धेनु सुर धरनी ।।
तब तब प्रभु धरि विविध शरीरा । हरहों कृपा निधि सज्जन पीरा ।।

माता पिता की आज्ञानुसार प्रभु राम ने चौदह वर्ष वन में बिताये। इस वनवास काल में उन्होंने दुष्टों को मोक्ष देकर पृथ्वी पर शांति और धर्म की स्थापना की। वनवास के अन्तिंम वर्ष में उन्होंने जय विजय के पुनर्जन्म स्वरूप असुर रावण और कुम्भकरण को भी मोक्ष दिया। रावण के अनुज विभीषण को लंकाधिपति बना कर श्री राम तब अयोध्या लौट आए। उनके अयोध्या लौटने पर अयोध्या वासिओं ने अति प्रसन्नता दर्शाते हुए अयोध्या नगर को दीप मालाओं से जगमग कर दिया। तभी से दीपावली पर्व मनाने का शुभ प्रारम्भ हुआ।

भगवान् श्री राम के अयोध्या लौटने पर उनका राज्याभिषेक हुआ और उन्होंने राम-राज्य की स्थापना की। गोस्वामी तुलसी दास जी राम राज्य का वर्णन करते हुए कहते हैं:

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा ॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती ॥

'रामराज्य' में दैहिक, दैविक और भौतिक ताप किसी को नहीं व्यापते। सब मनुष्य परस्पर प्रेम करते हैं और वेदों में बताई हुई नीति (मर्यादा) में तत्पर रहकर अपने-अपने धर्म का पालन करते हैं।

इस प्रकार एक युग तक प्रभु श्री राम ने अयोध्या का राज्य किया। प्रभु के साकेत धाम जाने का जब समय आया तब उन्होंने अपने राज्य को दो भागों में विभाजित किया और प्रत्येक एक भाग पर क्रमशः अपने पुत्र लव और कुश का राज्याभिषेक किया। तत्पश्चात सरयू में जल समाधि ले उन्होंने विष्णु लोक को प्रस्थान किया।

भगवान् श्री राम के लव और कुश को दिए आदेशानुसार अयोध्या के महल को मंदिर में परिवर्तित कर दिया गया। लव ने अपनी राजधानी लवनगर बनाई जो आधुनिक नगर लाहौर है, तथा कुश ने अपनी राजधानी अयोध्या से कुछ कोस दूर कुशीनगर को बनाया। कुश ने अयोध्या महल को परिवर्तित कर उसे

मंदिर बनाने का उत्तरदायित्व लिया और तब यहां एक अत्यंत सुन्दर मंदिर की स्थापना हुई।

चक्रवर्ती सम्राट कुश के बाद कुछ पीढ़ीओं तक तो इस अयोध्या मंदिर का रख-रखाव पूर्ण श्रद्धा से होता रहा। ऐसा उल्लेख है कि चक्रवर्ती सम्राट कुश के ४४वें वंशज सूर्यवंश के अंतिम सम्राट महाराजा बृहद्बल तक श्री अयोध्या राम मंदिर की देखभाल अच्छे प्रकार से होती रही। लेकिन समय के साथ साथ यह मंदिर जीर्ण अवस्था में पहुँच गया। आज से २,५०० वर्ष पूर्व यह अयोध्या मंदिर पूर्ण खंडहर बन चुका था।

साक्ष्यों के अनुसार, आज से लगभग २,२०० वर्ष पूर्व उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य आखेट करते हुए एक बार अयोध्या तक आ गए। लम्बी यात्रा से वह बहुत थके हुए थे अतः सरयू नदी के किनारे एक वृक्ष के नीचे विश्राम के लिए लेट गए। तब उनको वहां स्वप्न में कई चमत्कार दिखाई दिए। उन्होंने देखा कि दो अत्यंत सुन्दर राजकुमार हाथों में धनुष वाण लिए अपने अश्वों पर आखेट के लिए जा रहे हैं। उन्होंने एक मृगी का शिकार किया। तभी उन्होंने देखा कि पास जंगल से उस मृगी के बच्चे निकल कर अपनी माँ के पास आ रुदन करने लगते हैं। उनमें से बड़े राजकुमार का हृदय द्रवित हो जाता है, और वह किसी दैवीय शक्ति से उस मृत मृगी को जीवित कर देते हैं। सम्राट विक्रमादित्य को उन राजकुमारों में प्रभु की झलक दिखाई देती है। निद्रा टूटने पर सम्राट विक्रमादित्य ने इस स्थान के बारे में खोज प्रारम्भ कर दी और तब उन्हें पता चला कि यह भगवान् श्री राम की जन्म स्थली है। प्रभु की जन्मस्थली ज्ञात होने से उनका हृदय अत्यंत प्रफुल्लित हुआ और तब उन्होंने वहां एक भव्य मंदिर का पुनर्निर्माण किया।

लगभग १,६०० वर्षों तक इस मंदिर का रख-रखाव बहुत अच्छी प्रकार से होता रहा। सम्राट विक्रमादित्य द्वारा नियुक्त पुजारिओं के वंशज वहां स्थापित श्री राम लला की यथोचित पूजा करते रहे। श्री राम मंदिर को कभी आर्थिक कठिनाई नहीं हुई। मंदिर में श्रद्धालुओं द्वारा चढ़ावा एवं कई हिन्दू सम्राटों से प्राप्त दान धनराशि से पर्याप्त आर्थिक सहायता मिलती रही। फिर १५२८ ईश्वी

का काला युग आया जब शहंशाह बाबर के एक सेनापति मीर बाकी ने सम्राट बाबर के आदेश पर साम्राज्य विस्तार के लिए अयोध्या पर हमला बोल दिया। उसने आसानी से अयोध्या पर अपनी जीत प्राप्त की और सर्व प्रथम श्री राम मंदिर को ध्वस्त कर वहां एक मस्जिद का निर्माण किया, और उसका नाम रख दिया बाबरी मस्जिद।

मंदिर-मस्जिद विवाद

अभाग्य से हिन्दू मुग़लों की शक्ति के आगे अधिक कुछ नहीं कर पाए। ऐसा कहा जाता कि कुछ छुट-पुट विरोध अवश्य हुए लेकिन उन्हें तत्काल दबा दिया गया।

सर्वप्रथम १८५३ में अंग्रेज़ों के शासन काल में इस पर विवाद गहराया। हिन्दुओं के एक जत्थे ने बाबरी मस्जिद पर अधिकार लेने का प्रयास किया। कहते हैं कि अनगिनत हिन्दुओं को इस प्रयास में अपने जीवन को खोना पड़ा। कहीं हिन्दू मुसलमान विवाद पूरे भारतवर्ष में न फैल जाए इसलिए अँग्रेज़ों ने एक युक्ति निकाली। उन्होंने १८५९ में बाबरी मस्जिद को दो भागों में विभक्त कर दिया। उन्होंने नमाज के लिए मुसलमानों को अन्दर का हिस्सा प्रदान कर दिया, और हिन्दुओं को बाहर का भाग उपयोग में लाने की अनुमति दे दी जहाँ हिन्दुओं ने राम लला की स्थापना कर वहां पूजा प्रारम्भ कर दी। अंग्रेजी प्रशासन ने अंदर के भाग में लोहे की छड़ों से घेराबंदी कर दी और हिंदूओं के वहां प्रवेश को वर्जित कर दिया। इस अंग्रेज़ों की युक्ति से मामला सुलझने के अतिरिक्त और उलझ गया। इस निर्णय से हिंदूओं की आस्था और भावनाएं अत्यंत आहत हुईं, और हिंदूओं और मुसलमानों के बीच विवाद की खाई चौड़ी होती चली गयी।

सन १८८५ में पहली बार यह विवादित मामला अदालत में पहुंचा। हिंदू साधु महंत श्री रघुबर दास ने फैजाबाद अदालत में बाबरी मस्जिद परिसर में राम मंदिर बनवाने की अनुमति मांगी, लेकिन अदालत ने उनकी प्रार्थना को स्वीकृत नहीं किया। यह विवाद गहराता गया और सन १९३४ में इसको लेकर एक बार फिर हिन्दू-मुसलमान दंगे हुए। दंगों में फिर से दोनों ही ओर, हिन्दू एवं मुसलमानों, के जीवनों की क्षति हुई। दंगों में मस्जिद के ढाँचे में भी क्षति हुई जिसका ब्रिटिश सरकार ने पुनर्निर्माण करा दिया।

सन १९४९ तक यह विवाद इसी प्रकार चलता रहा लेकिन कोई समाधान नहीं निकला। २२/२३ दिसंबर १९४९ की मध्य-रात्री को पांच साधु - साधुबाबा श्री

राघवदास, परमहंस श्री रामचंद्र दास, श्री अभिराम दास, श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार एवं महंत श्री दिग्विजय नाथ जी, सरयू नदी के तट पर एकत्रित हुए और स्नान कर श्री राम लला की मूर्ति को एक टोकरी में रख बाबरी मस्जिद की ओर प्रस्थान किए। यही शीत ऋतू की भयावनी रात्रि थी। सम्पूर्ण वातावरण में कोहरे के कारण हाथ को हाथ दिखाई नहीं देता था। इस अंधेरी कोहरे भरी रात्रि में उन्होंने बाबरी मस्जिद के गर्भ में प्रवेश कर श्री राम लला की मूर्ति को स्थापित कर उसमें प्राण प्रतिष्ठा कर दी। इस समय दो कांस्टेबल वहां तैनात अवश्य थे लेकिन ठंडी और अंधेरी रात्रि के कारण ऐसा प्रतीत होता है कि वह सो गए होंगे क्योंकि उनके विवेचन से इस प्रकार के मूर्ति स्थापना एवं प्राण प्रतिष्ठा के तथ्य नहीं मिलते। एक कांस्टेबल बरकत अली का तो यह कहना है जो कि आधिकारिक रूप से अभिलिखित है कि वहां श्री राम लला एक चमत्कार से प्रगट हो गए।

मुसलमानों ने इस पर गहरा विरोध व्यक्त किया। फिर दोनों पक्षों ने अदालत में मुकदमा दायर कर दिया। इसके बाद सरकार ने इस स्थल को विवादित घोषित कर ताला लगवा दिया। इसी बीच मुसलमानों ने वहां मस्जिद के आगे मूर्ति स्थापना के कारण इस स्थल को नमाज़ के विरुद्ध घोषित कर वहां नमाज़ पढ़ना बंद कर दिया। एक मौलवी की नियुक्ति अवश्य रही जो केवल इसके रख-रखाव के लिए थी।

श्री गोपाल सिंह विशारद ने फैजाबाद अदालत में सन १९५० में एक प्रार्थना कर भगवान राम लला की पूजा की अनुमति माँगी। महंत श्री रामचंद्र दास जी ने भी इस समय मस्जिद में हिंदूओं द्वारा पूजा जारी रखने के लिए याचिका लगाई। अदालत में इस विवादित मस्जिद को अब 'ढांचा' के रूप में संबोधित किया जाने लगा।

सन १९५९-६१ के बीच दोनों ही पक्षों, हिन्दू और मुसलमानों, ने इस विवादित स्थल के अधिकार प्राप्त करने के लिए अदालत का सहारा लिया। हिन्दुओं की ओर से निर्मोही अखाड़ा ने विवादित स्थल के हस्तांतरण के लिए मुकदमा किया, वहीं मुसलमानों की ओर से उत्तर प्रदेश सुन्नी वक्फ बोर्ड ने भी बाबरी

मस्जिद पर अधिकार के लिए मुकदमा कर दिया। तभी कोठारी बंधुओं ने मस्जिद के गुम्बद पर भगवा झंडा फहरा दिया । अभाग्य से पुलिस के द्वारा फायरिंग में उनकी जान चली गई।

सन १९८३ में विश्व हिन्दू परिषद के आवाहन पर 'गंगा यात्रा' निकाली गई। बंगाल से सोमनाथ तक इस यात्रा का प्रत्येक स्थान पर जन समूह ने स्वागत किया। इस यात्रा ने जन समूह के हृदय में श्री राम मंदिर की महत्वा दर्शाई।

सन १९८४ में विश्व हिंदू परिषद के नेतृत्व में हिंदूओं ने भगवान श्री राम के जन्मस्थल को मुक्त करने और वहां श्री राम मंदिर बनाने के लिए एक समिति का गठन किया। उसी समय गोरखपुर में गोरखनाथ धाम के महंत श्री अवैद्यनाथ ने श्री राम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति भी बनाई। श्री महंत अवैद्यनाथ ने अपने शिष्यों और लोगों से यहां तक कह दिया कि वह उसी पार्टी को वोट दे जो हिंदूओं के पवित्र स्थानों को मुक्त कराए। बाद में इस अभियान का नेतृत्व भाजपा नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी ने संभाल लिया।

फरवरी १९८६ में जिला मजिस्ट्रेट ने हिंदूओं को प्रार्थना करने के लिए विवादित स्थल के दरवाजे से ताला खोलने का आदेश दिया। मुसलमानों ने इसके विरोध में बाबरी मस्जिद संघर्ष समिति/बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी बनाई। इस वर्ष विश्व के चालीस देशों से आई पूजित शिलाओं से अयोध्या मंदिर परिसर में 'श्री राम शिला पूजन' किया गया।

२५ सितंबर १९९० को भाजपा के तत्कालीन अध्यक्ष लाल कृष्ण आडवाणी ने श्री राम मंदिर के समर्थन में गुजरात के सोमनाथ से उत्तर प्रदेश के अयोध्या तक रथ यात्रा निकाली ताकि हिंदुओं को इस महत्वपूर्ण मुद्दे से अवगत कराया जा सके। इस अवसर पर हजारों कार-सेवक अयोध्या में उपस्थित हुए। उनकी रथ यात्रा को बिहार में रोक लिया गया और उन्हें बंदी बना लिया गया। इस गिरफ्तारी से गुजरात, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश में साम्प्रदायक दंगे भड़क गए। इस समय मंदिर निर्माण के लिए देश भर से करोड़ों ईंटे अयोध्या भेजी गईं।

श्री राम मंदिर अयोध्या - एक संक्षिप्त इतिहास

३० अक्टूबर १९९० को अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन के लिए पहली बार कार-सेवा हुई। कार-सेवकों ने मस्जिद पर चढ़कर भगवा झंडा फहराया। अभाग्य से पुलिस की गोलीबारी से अनगिनत कार सेवकों की मौत हो गई। गोली चलाने का आदेश उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री मुलायम सिंह यादव ने दिया था। इससे देश भर में हिन्दुओं में आक्रोश छा गया। तत्कालीन प्रधानमंत्री ने विवाद सुलझाने का प्रयास भी किया लेकिन सफलता नहीं मिली। इसमें हिन्दू सेवक संघ पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया का भी सहयोग रहा। माननीय श्री दाम जी भाई कोरिया ने अपने ४४ कार-सेवकों को साथ लेकर इसमें भाग लेने की योजना बनाई थी, परन्तु कुछ कारणों वश केवल २२ कार-सेवकों को साथ लेकर अयोध्या पहुँच सके। भाई जी कहते हैं कि उत्तर प्रदेश सरकार के धारा १४४ लगाने के कारण तथा कार-सेवकों का अयोध्या में प्रवेश वर्जित होने के कारण वह अपने कार सेवकों के साथ पहले मध्य प्रदेश से प्रयागराज पहुंचे और फिर वहां से २०० किलो मीटर की यात्रा अयोध्या तक पैदल ही की। अपने इन संस्मरण का उन्होंने इस पुस्तिका के 'दो शब्द' में संक्षिप्त में वर्णन किया है। उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री मुलायम सिंह यादव के आदेश पर स्थानीय पुलिस ने उस समय गोली चलाई थी। एक गोली उनकी कनपटी से होकर निकल गईं। भाग्य से कहिए या प्रभु श्री राम की कृपा, उन्हें किसी प्रकार की क्षति नहीं हुई, लेकिन उस दिन अनगिनत कार-सेवकों ने अपने जीवन की आहुति इस यज्ञ में दे दी।

बाबरी मस्जिद विध्वंस

६ दिसंबर १९९२ । लगभग एक लाख कार-सेवक अयोध्या पहुँच चुके थे। उद्देश्य था, बाबरी मस्जिद का विध्वंस करना। कुछ लेख बताते हैं कि उद्देश्य बाबरी मस्जिद का विध्वंस करना नहीं था, अपितु एक प्रतीकात्मक कार-सेवा करना था, लेकिन कार-सेवकों की भावनाओं को नियंत्रण करना नेताओं को असंभव हो गया। जिस विवादित चबूतरे पर प्रतीकात्मक कारसेवा यज्ञ और हवन के रूप में होनी थी, वहां श्री आडवाणी और श्री जोशी को देख कार-सेवक भावनात्मक हो गए और लोहे की बाड़ तोड़ डाली। इसी बीच लगभग २०० कार-सेवक विवादित मस्जिद में घुस गए। राज्य पुलिस और पीएसी उन्हें रोक नहीं पाई। उन्होंने तुरंत ढांचे का पहला गुंबद गिरा दिया। अब स्थिति तेजी से बिगड़ रही थी। अयोध्या में सांप्रदायिक दंगों की घटनाएं प्रारम्भ हो गई थीं। सायं चार बजे तक विवादित मस्जिद का मुख्य गुंबद भी गिरा दिया गया। यहीं गर्भगृह स्थित था। भीड़ को बेकाबू होता देख सारे स्थानीय अफसर भाग खड़े हुए थे। रामकथा कुंज में सिर्फ कुछ साधु-संत ही रह गए थे। सांय होते होते सभी तीनों गुम्बज ध्वस्त कर दिए गए थे। विजयी हुए कार-सेवक अपने अपने हाथों में विध्वस्त मस्जिद का सामान लिए प्रसन्नता से अपने अपने घर को तब चल दिए ।

इसमें भी हिन्दू सेवक संघ पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया का सहयोग रहा। माननीय श्री दाम जी भाई कोरिया अपने कार-सेवकों को साथ लेकर इसमें भाग लेने अयोध्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम के बाद वह मुंबई आ गए।

इस घटना के बाद पूरे देश में साम्प्रदायक दंगे भड़क गए। लगभग दो हज़ार लोग इन साम्प्रदायक दंगों में मारे गए, ऐसा कहा जाता है।

फरवरी २००२ में फिर हज़ारों की संख्या में कार सेवक अयोध्या में उपस्थित हुए। योजना थी मंदिर निर्माण प्रारम्भ करने की। लेकिन चूँकि यह केस अदालत में विचाराधीन था संभवतः इस कारण नेताओं ने अदालत के निर्णय की प्रतीक्षा करने का निश्चय किया और कार सेवक वापस लौट गए। इसी बीच

श्री राम मंदिर अयोध्या - एक संक्षिप्त इतिहास

२७ फरवरी २००२ को रेल से लौटते कार सेवकों को गुजरात में स्थित गोधरा शहर में मुस्लिम समुदाय ने आग लगा दी जिससे ९० यात्री मारे गए जिनमें अधिकांश लोग हिन्दू बिरादरी से थे। इस घटना से भी पूरे देश में साम्प्रदायक दंगे भड़क उठे। इन दंगों में १,२०० से अधिक लोगों की मारे जाने की सूचना है।

यह विवाद अदालत में चलता रहा। सन २०१० में इलाहाबाद हाई कोर्ट ने अपने फैसले में विवादित स्थल को सुन्नी वक्फ बोर्ड, रामलला विराजमान और निर्मोही अखाड़ा के बीच 3 बराबर-बराबर हिस्सों में बांटने का आदेश दिया। इस पर असंतुष्ट पक्ष इस मामले को सुप्रीम कोर्ट में ले गए जिसमे सन २०११ में सुप्रीम कोर्ट ने अयोध्या विवाद पर इलाहाबाद हाई कोर्ट के फैसले पर रोक लगा दी।

सन २०१७ में सुप्रीम कोर्ट ने 'आउट ऑफ कोर्ट सेटलमेंट' का आह्वान किया। ८ मार्च २०१९ को फिर से सुप्रीम कोर्ट ने मामले को मध्यस्थता के लिए भेजा। पैनल को ८ सप्ताह के अंदर कार्यवाही समाप्त करने का आदेश दिया।

१ अगस्त २०१९ को मध्यस्थता पैनल ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। हालांकि २ अगस्त २०१९ को सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि मध्यस्थता पैनल मामले का समाधान निकालने में विफल रहा है।

तद्पश्चात ६ अगस्त २०१९ से सुप्रीम कोर्ट ने अयोध्या मामले की प्रतिदिन सुनवाई प्रारम्भ की। १६ अक्टूबर २०१९ को अयोध्या मामले की सुनवाई पूरी हुई तथा तब सुप्रीम कोर्ट ने अपना निर्णय सुरक्षित रखा।

९ नवंबर २०१९ को सुप्रीम कोर्ट के पांच जजों की बेंच ने राम मंदिर के पक्ष में फैसला सुनाया। २.७७ एकड़ विवादित जमीन हिंदू पक्ष को मिली। मस्जिद के लिए अलग से 5 एकड़ जमीन देने का आदेश दिया। सुप्रीम कोर्ट का निर्णय आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (एएसआई) के तथ्य पर आधारित था। आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (एएसआई) ने यह सिद्ध कर दिया कि

मस्जिद के नीचे जो ढांचा था, वह इस्लामिक ढांचा नहीं था। ढहाए गए ढांचे के नीचे एक मंदिर था।

५ अगस्त २०२० को राम मंदिर भूमि पूजन कार्यक्रम श्री नरेंद्र मोदी, प्रधान मंत्री, के द्वारा संपन्न हुआ। इसमें आरएसएस सरसंघचालक श्री मोहन भागवत, यूपी के सीएम श्री योगी आदित्यनाथ और साधु-संतों समेत १७५ लोग उपस्थित थे।

श्री राम मंदिर अयोध्या प्रस्तावित मॉडल

श्री राम मंदिर अयोध्या का प्रस्तावित मॉडल निम्न है ।

श्री राम मंदिर अयोध्या

श्री राम आरती

हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ
आरती उतारूँ तुझे तन मन बारूँ,
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ........

कनक शिहांसन रजत जोड़ी,
दशरथ नंदन जनक किशोरी,
युगुल छबि को सदा निहारूँ,
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ........

बाम भाग शोभति जग जननी,
चरण बिराजत है सुत अंजनी,
उन चरणों को सदा पखारू,
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ........

आरती हनुमंत के मन भाये,
राम कथा नित शिव जी गाये,
राम कथा हिरदय में उतारू,
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ........

चरणों से निकली गंगा प्यारी,
बधन करती दुनिया सारी,
उन चरणों में शीश को धारू,
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ........

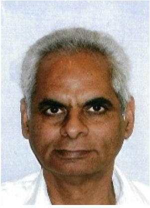

डॉ यतेंद्र शर्मा - सन १९५३ में एक हिन्दू सनातन परिवार में जन्मे डॉ यतेंद्र शर्मा की रुचि बचपन से ही सनातन धर्म ग्रंथों का पठन पाठन एवं श्रवण में रही है। संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने अपने पितामह श्री भगवान दास जी एवं नरवर संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सालिग्राम अग्निहोत्री जी से प्राप्त की और पांच वर्ष की आयु में महर्षि पाणिनि रचित संस्कृत व्याकरण कौमुदी को कंठस्थ किया। उन्होंने तकनीकी विश्वविद्यालय ग्राज़, ऑस्ट्रिया, से रसायन तकनीकी में पी.अच्.डी की उपाधि विशिष्टता के साथ प्राप्त की। सन १९८९ से डॉ यतेंद्र शर्मा अपने परिवार सहित पर्थ ऑस्ट्रेलिआ में निवास कर रहें हैं, तथा पश्चिमी ऑस्ट्रेलिआ के खनन उद्योग में कार्य रत हैं।

सन २०१६ में उन्होंने अपने कुछ धार्मिक मित्रों के साथ एक धार्मिक संस्था 'श्री राम कथा संस्थान पर्थ' की स्थापना की। यह संस्था श्री भगवान् स्वामी रामानंद जी महाराज (१४वीं शताब्दी) की शिक्षाओं से प्रभावित है तथा समय समय पर गोस्वामी तुलसी दास जी रचित श्री राम चरित मानस एवं अन्य धार्मिक कथाओं का प्रवचन, सनातन धर्म के महान संतों, ऋषियों, माताओं का चरित्र वर्णन एवं धार्मिक कथाओं के संकलन में अपना योगदान करने का प्रयास करती है।

HINDU COUNCIL OF AUSTRALIA
Objectives:

Preserve, promote and share Hindu religious values and culture in Australia; Unite Hindu faith, cultural organisations and groups in Australia; Represent Hindu community in its dealings with Australian Federal, State and Local Government bodies; Expand and strengthen links between Hindu organisations throughout Australia by creating effective communication and collaborative networking; Advocate for the religious, cultural, social and educational needs of Hindus in Australia; Celebrate religious and cultural festivals, exhibitions and programs; Educate and support Hindu youth in all aspects of their growth and empowerment; Promote harmony and understanding between Hindu and other faiths in Australia through inter-faith dialogue; Provide information for understanding of Hindu traditions, culture, philosophy and theology in Australia.

Perth Chapter:
President: Shri Dam Ji Bhai Koriya
Website: https://hinducouncil.com.au

SHRI RAM KATHA SANSTHAN PERTH
Objectives:

Following the teachings of Shri Ramanadi Sampraday Founded By Lord Swami Ramanand Ji (14^{th} Century); Narration of holy stories of Lord Ram and Other Sanatan scriptures; Promotion of Sanatan Dharm.

President: Dr Yatendra Sharma
Website: https://shriramkatha.org